RAJYA SABHA

Thursday, the 2nd August, 1984/ 11 Sravana, 1906 (Saka)

The House met at eleven of the clock *Mr. Chairman* in the Chair.

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

MR. CHAIRMAN: Question No. 161. Mr. Chaturanan Mishra.

SHRI CHATURANAN MISHRA: Question No. 161.

Brain drain from the Madras Atomic Power Stations ..

161. SHRI CHATURANAN MISHRA:
MISS SAROJ KHAPARDE:

Will the PRIME MINISTER be pleased to state:

(a) whether it is a fact that in the Madras Atomic Power Project a large number of experienced trained engineers have resigned and left for Gulf countries as a result of which the plant is limping; and

(b) if so, what steps Government propose to take stop the drain of trained personnel from the country?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF SCIENCE AND TECHNOLOGY, ATOMIC ENERGY, SPACE, ELECTRONICS AND OCEAN DEVELOPMENT (SHRI SHIVRAJ V. PATIL): (a) It is true that a number of trained and experienced engineers and technicians have resigned from the Madras Atomic Power Project. However, the Station Authorities have ensured that the performance of Unit-I is not adversely affected on this account.

(b) Government have taken various measures to prevent the loss of trained and experienced personnel by providing better service conditions.

श्री चतुरानन मिश्र : माननीय सभापति महोदय, सरकारी उत्तर से भी स्पष्ट है कि प्रतिभा पलायन की कैसी भयंकर स्थिति पैदा हो गयी है और ऐसा भी हो सकता है कि हमारे ही टेलेन्ट से वे ऐसे हथियार बनावें जिससे हम ही मारे जावें ऐसी हालत में मैं सरकार से जानना चाहता हूं कि प्रतिभा पलायन, ब्रेन-ड्रेन की समस्या की पूरी जांच कि क्यों लोग जा रहे हैं, क्या जाब सैटिसफेक्शन नहीं होती है, या एमेनिटीज पूरी नहीं मिलती हैं या कोई दूसरा कारण है, इसके बारे में क्या सरकार जांच करवायेगी जिससे पूरी स्थिति पर प्रकाश पड़ सके ?

श्री शिवराज वी० पाटिल : श्रीमन्, यह प्रतिभा पलायन के प्रश्न का अलग-अलग तरीकों से जांच-पड़ताल करवाया गया है कि परमाणु बिजली केन्द्रों में से जो साईंटिस्ट और टैक्नोशियन बाहर जाते हैं उनके संबंध में भी जांच-पड़ताल करने के लिए एक कमेटी बिठाई गई थी और उस कमेटी का रिकार्ड यहां पर आया है और उसके ऊपर

†The question was actually asked in the floor of the House by Shri Chaturanan Mishra.

विचार किया जा रहा है । हमारे पास जो साईंटिस्ट यहां काम करते हैं और दूसरे टैक्नोलोजिस्ट और टक्नोशियनस काम करते हैं उसमें से कुछ बाहर जरूर गए हैं । मगर बहुत सारे साइनटिस्ट यहां काम करने में जो आनन्द उन्हें आता है और वह काम का जो महत्व है उसको समझ कर यहां पर रहते हैं सरकार की यह कोशिश है कि जहां तक हो सके उस आनन्द में उनको बढ़ावा मिले अच्छा-अच्छा काम देकर और उनको जो भी सुविधाएं चाहिएं घर के लिए उनको तनख्वाह के स्वरूप में उनको एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए कनवेंयस एलाऊंस के स्वरूप में, इन सारी चीजों का विचार करके उनको सुविधा देने की कोशिश की जा रही है

श्री चतुरानन मिश्र : सभापति महोदय, मैंने यह पूछा था कि कोई सार्वजनिक जांच इस पर सरकार करवायेगी कि नहीं तो उत्तर तो बिल्कुल अधूरा है और मैं फिर आपके जरिए सरकार से आग्रह करूंगा कि वह इसका पूरा जवाब दे और दूसरा यह कि क्या इस संबंध में कोई कानून सरकार बनायेगी जिससे ऐसे प्रतिभा का पलायन न हो ?

श्री शिवराज वी० पाटिल : सभापति महोदय, जहां तक पहले इस प्रश्न का सवाल है मैंने अच्छी तरह से उत्तर दिया है कि डिपार्टमेंट आफ एटामिक एनर्जी की तरफ से इस चीज के लिए, जांच पड़ताल के लिए एक कमेटी बनाई गई थी और उस कमेटी की रिपोर्ट आई है और उसके बारे में पूरी तरह से डिपार्टमेंट सोच-विचार कर रहा है लेकिन अब इससे ज्यादा इस संबंध में शायद कोई उत्तर देना मेरे लिए मुश्किल है । दूसरा, कानून बनाने की बात है, कानून बनाने का असर फिर से होता है, यह पूरी तरह से सोचने की बात है, उसका कानून बनाया जा सकता है या नहीं बनाया जा सकता है, इसका तो उत्तर अभी नहीं दिया जा सकता है क्योंकि कानून बनाने से कुछ ऐसे भी सवालात पैदा हो सकते हैं कि साईंटिस्ट यहां आये या नहीं आयें या फिर आने के बाद दूसरी क्या तकलीफ हैं उसके बारे में सोचना पड़ेगा और उसके बारे में अभी "हां" या "ना" में जवाब देना मुश्किल है

SHRI SHANKARRAO NARAYANRAO DESHMUKH: Sir, I would like to know whether it is a fact that the Report of the Committee contains the appalling fact that they were lowly paid and they were not properly treated in the Department concerned.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Sir, this question is a relative question. If we are to compare the emoluments which are given to the scientists, technologists and technicians working in the Atomic Energy Department with the emoluments which are given to the engineers, technologists and scientists working in the public undertakings, the answer would roughly be "No", would be in the negative. If it is compared with the emoluments made available to the engineers and scientists working in some private sector companies or in companies which are situated outside or foreign companies, the answer will be a little different. But there is no record to show even in the report that they are not treated properly.

श्री रामानंद यादव : मान्यवर, यह देखा जाता है कि ...

श्री सभापति : क्या देखा जाता है ?

श्री रामानंद यादव : पहले हो आपने पूछ लिया सुनिए, तो । मैं बता रहा हूं, क्या देखा जाता है । जरा भूमिका

5

तो बांधने दीजिए । जैसे ही इंजीनियर निकलते हैं कालेज से या साइंटिस्ट निकलते हैं उनको नौकरी नहीं मिलती हैं तो इन प्रतिष्ठानों में घुस जाते हैं । चूंकि रूल ऐसा बना हुआ है, जिसमें कि इंजीनियर साइंटिस्ट अपनी परीक्षा पास किया और इनमें चले गए । उनको हर तरह की सुविधा मिलती है, टेक्नोक्रेट हो जाते हैं, कुछ दिनों बाद ट्रेनिंग हो जाती हैं, दक्षता प्राप्त कर लेते हैं तो रुपयों के प्रलोभन में बाहरी देशों में चले जाते हैं । इसका एक कारण यह है कि जो सरविस रूलस हैं, कंडीशन हैं, वे इतने कड़े नहीं हैं । वे तुरन्त रिजाइन देते हैं और तुरन्त उसका रिजाइन एक्सेप्ट कर देते हैं और वे वहां से चले जाते हैं । तो मैं सरकार से कहना चाहता हूं कि खासकर पावर एटामिक प्लांट में हमारे यह लोग रिजाइन करते हैं और विदेशों में जाकर एंगाइनमेंट लेते हैं काम लेते हैं। तो हमारे ये ट्रेड साइंटिस्ट वगैरह विदेशों में चले जाते हैं। इसको रोकने के लिए क्या सरकार अपने सरविस रूलस में इस तरह से जो काम करने वाले साइंटिस्ट हैं, टेक्नोक्रेट हैं, उनको सरविस कंडीशन में स्ट्रीक परिवर्तन करेगी ताकि वे बिना सरकार की परमिशन के बाहर के मुल्कों में जाकर कहीं नौकरी न कर सकें ।

श्री शिवराज वी० पाटिल : श्रीमन् , यह बात सही है कि कालेजों से निकलने के बाद इनको इस डिपार्टमेंट में लिया जाता है। साल-डेढ़ साल के लिये इनको ट्रेनिंग दी जाती है । उसके बाद जब ट्रेनिंग , स्टाइफंडरी ट्रेनिंग यह होती है, गवर्नमेंट की तरफ से पैसा देकर ट्रेनिंग दी जाती है, तो उनसे बोंड लिया जाता है कि वे इन प्रोजेक्टों में काम करेंगे । लेकिन कभी कभी उनके ऊपर जो खर्च हुआ होता है, वे उसे वापस करके चले जाते हैं या बोंड का पीरिड खत्म होने के बाद बाहर जाने की सोचते हैं । अब यह जो बात सम्मानीय सदस्य ने उठाई है कि प्रोजेक्ट में काम करने वाले साइंटिस्ट बाहर चले जाते हैं, इनके लिए कानून बनाएं ? तो इसका जवाब मैंने पहले प्रश्न में जरूर दिया है । वैसे यह प्रश्न अहम प्रश्न है । मगर इसको हैंडल किस प्रकार से कर सकते हैं, इसको देखना पड़ेगा ।

SHRI VITHALBHAI MOTIRAM PATEL: Mr. Chairman, Sir, may I know from the hon. Prime Minister whether it is a fact that enough funds are not provided for research work to the scientists and engineers and because of frustration they go abroad where they are getting better facilities and better funds for research work.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: I have already stated that we are trying to provide more than enough facilities to our scientists, technologists and technicians to carry on their research work in different areas. We were spending only 50 crores of rupees in the First Five Year Plan and in the Sixth Plan we have allotted about 3500 crores of rupees for research and development. The Departments are with the hon. Prime Minister who is directly looking into the problems of research and development and providing facilities wherever it is possible by advising the different Departments in the Government of India. Our approach is to provide facilities which are really required and to see that in areas of science and technology we catch up with the world.

MR. CHAIRMAN: Only two more questions.

श्रीमती प्रेमिलाबाई दाजीसाहेब चव्हाण : क्या सरकार को पता है कि जो हमारे आज के टैक्नोक्रेट्स हैं they want to come back but they are reluctant because the same facilities which they want are not given by our Government. But they are very keen to return to our country.

श्री शिवराज वी० पाटिल : सरकार को यह मालूम है कि हमारे यहां से साइंटिस्ट

डाक्टर्स, इंजिनियर्स जो बाहर गये है उनमें से कुछ लोग यहां वापस आ गये है और सरकार की तरफ से यह भी बताया गया है कि वे जब यहां आयेंगे तो उनका पूरी तरह से स्वागत किया जायेगा और उन को जो फैसिलिटीज हम यहां दे सकते हैं उतनी फैसिलिटीज हम जरूर देने की कोशिश करेंगे। हमारा यह प्रयत्न भी रहा है कि जैसी कंडीशंस उनको वहां पर मिलती है, बिलकुल वैसी तो नहीं, लेकिन करीब-करीब वैसी ही हम बना कर उनको यहां पर दे सकें। तो हम इसकी कोशिश कर रहे हैं। अगर यह पाया जाता है कि लेबोरेटरी की जो कंडीशंस हैं उनका ही ख्याल नहीं किया जाता है, लेकिन बाहर की सोशल इंडी की जो कंडीशंस हैं, वहां जो फैसिलिटीज उनको मिलती है और पैसे के मामले में जो फैसिलिटीज उनको मिलती हैं उनका भी ख्याल किया जाता है और कभी-कभी ऐसा देखा जाता है कि जो अपने देश प्रेम के कारण अपने देश की महत्ता को बढ़ाना चाहते हैं वह इन सारी चीजों को छोड़कर भी वापस आ जाते हैं। लेकिन कुछ लोग ऐसे हैं कि जो अपनी पढ़ाई के लिये या और कुछ अन्य कारणों के लिये भी वहां हैं।

MR. CHAIRMAN: Now the last supplementary.

SHRI VISHVAJIT PRITHVIJIT SINGH: Mr. Chairman, Sir, this is not the first time that this House has discussed the question of our trained engineers and technocrats from sensitive areas leaving the country. A lot of apprehension has been expressed about the secrets belonging to our nation going away from us, reaching the hands of our enemies or the countries which are inimical to us. I would like to know from the Minister if it is not a fact that there must be various categories of scientists working in these power plants, those which work in the sensitive areas and those which work in the non-sensitive areas. Have their been any resignations or any departures from those areas which are most secret and most sensitive?

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Sir, for the benefit of the hon. Member I would like to bring to his notice that only three scientists and about 20 technicians have left from Madras Atomic Power Project. The number of scientists is less and the number of technicians is more. Now, they are going to the countries where lucrative remunerations are available to them. It would not be possible for me to give the detailed information whether these scientists were working in the sensitive areas or not but it is generally seen that the scientists working in the important areas are persons who understand their responsibility and as far as my knowledge at this time with the information which is available to me is concerned, this thing has not happened.

MR. CHAIRMAN: Question No. 162.

Protest against Anti-India propaganda by .. .. the B. B. C. ..

@*162. SHRI NAND KISHORE BHATT:†
SHRI BHIM RAJ:

Will the PRIME MINISTER be pleased to state:

(a) whether Government of India have lodged any protest with the British Government against the anti-India propoganda being telecast/broadcast by the B. B. C.; and

(b) if so, what are the details in this regard?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI A. A. RAHIM): (a) and (b) B. B. C. Radio on June 12 broadcast a programme featuring an interview with Dr. Jagjit Singh Chauhan in which he expressed violent and inflamatory views, and uttered threats aganist Indian leaders. Our High Commission in U.K. took strong exception to this broadcast and raised the matter with the British authorities.

†The question was actually asked on the floor of the House by Shri Nand Kishore Bhatt.

@Previously Starred Question No. 82, transferred from the 27th July, 1984.